DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

INDIAN ECONOMY

Part -10

LIVE 15-07-2024 08:00 PM

मुद्रा एवं बैंकिंग

मुद्रा:-

⇒ भुगतान का एक माध्यम है, जिसे सभी प्रकार के लेन देन में स्वीकार किया जाता है।

i) साख मुद्रा (भुगतान - चेक के माध्यम से होता है)

ii) वैधानिक मुद्रा (तुरंत - तरलता RBI धारक को वचन देता है। उतनी ही मूल्य अदा करने का)

तरलता (Liquidity):-

⇒ मुद्रा की उतने ही मूल्य की वस्तु या सेवा में पूर्ण परिवर्तनीयता।

100 ₹ ⟶ Market ⟶ मूल्य वस्तु / सेवा

(बिना क्षति)

मुद्रा की पूर्ति (supply of Money):-

⇒ मुद्रा की वह मात्रा जो लोगो के पास खर्च करने के लिए उपलब्ध हो।

⇒ ज्ञात - चैडलर का तुलना पत्र

⇒ 1961 में प्रथम और 1977 में दूसरा कार्यकारी दल गठित किया गया।

⇒ मुद्रा की उपलब्धता जिसका देशवासी जब चाहें तब प्रयोग कर सकते हैं।

मुद्रा की पूर्ति का घटता हुआ क्रम ↓

M_1 = (जनता के पास मुद्रा + बैंकों के पास मांग जमाएें (c+s) + रिजर्व बैंक के पास मांग जमाऐं)

M_2 = M_1 + डाकघरों की बचत जमाऐं (maturity period)

M_3 = M_1 + सहकारी बैंकों के पास समय जमा।

M_4 = M_3 + डाकघर की कुल जमाऐं।

मुद्रास्फीति (Inflation)

⇒ वस्तु की कीमतों में लगातार वृद्धि होती जाती है। एवं मुद्रा के मूल्य में कमी।

e.g. 5 ₹ ⟶ 1 Cadbury

10 ₹ ⟶ 1 Cadbury.

मुद्रास्फीति के प्रकार :-

① रेंगती हुई मुद्रास्फीति / नम्र मुद्रास्फीति -

⇒ कीमतों में वृद्धि → ईकाई का अंक = 3%

⇒ ये अर्थव्यवस्था के लिए अच्छी मानी जाती है।

② कूदती हुयी मुद्रास्फीति / गैलोपिंग स्फीति -

⇒ कीमतों में वृद्धि → ~~इकाई~~ दहाई, सैंकड़े का अंक ↑

③ चलती हुयी मुद्रास्फीति / दौड़ती हुयी मुद्रास्फीति -

⇒ कीमतों में वृद्धि - सैंकड़े के अंक से ज्यादा ↑

मुद्राअवस्फीति (Deflation)

⇒ वस्तु की कीमतों में कमी, मुद्रा का मूल्य अधिक।

मुद्रा का अवमूल्यन (Devaluation)

⇒ बाह्य मुद्रा की तुलना में अपनी मुद्रा का गिरना (मूल्य)

मुद्रा प्रत्यवस्फीति (Reflation)

⇒ मुद्राअवस्फीति बहुत अधिक होती है, कीमतें तेजी से नीचे गिरती है, तब सरकार अधिक से अधिक नोट छापती है।

स्टेग फ्लेशन (stagflation)

मुद्रास्फीति + बेरोजगारी

मांग का नियम :-

⇒ वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी मांग घट जाती है। मांग और कीमत में उल्टा सम्बंध होता है।

$$\text{कीमत} \propto \frac{1}{\text{मांग}}$$

पूर्ति का नियम :-

⇒ वस्तु की कीमत बढ़ने पर पूर्ति भी बढ़ जाती है, अर्थात् कीमत और पूर्ति में सीधा सम्बंध होता है।

$$\text{कीमत} \propto \text{पूर्ति}$$

गिफिन गुड्स (giffin goods):-

⇒ inferior goods.
⇒ निम्न कोटि की वस्तुऐं होती हैं।
⇒ जो सामान्यत: मांग के नियम का पालन नहीं करती।

कीमत ∝ मांग → इनके लिए कीमत और मांग में सीधा सम्बंध होता है।

प्रतिस्थापित वस्तुऐं:-

⇒ एक की कीमत बढ़ने पर दूसरे की मांग बढ़ जाती है।
चाय कीमत +, कॉफी मांग +

पूरक वस्तुऐं:-

⇒ एक दूसरे के साथ प्रयोग में लाई जाती हैं।
मांग - कार - पैट्रोल - कीमत +

pen + Refill
गैस + चूल्हा

हिन्दू वृद्धि दर (Hindu Growth Rate):- प्रो. राज कृष्णान

1950 → 1990-91 → आर्थिक सुधार
40 year
growth rate = 3.5%

L = उदारीकरण
P = निजीकरण
G = वैश्वीकरण

1950-1980
30 years
3.5%

मूल्य सूचकांक

थोक मूल्य सूचकांक (WPI)

संकलन - उद्योग मंत्रालय
"आर्थिक सलाहकार कार्यालय"
Based on. (साप्ताहिक स्तर पर)
आधार वर्ष = 2011-12
कुल = 697 वस्तुओं

उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI)

ग्रामीण
ग्रामीण श्रमिकों
कृषि श्रमिकों

शहरी
औद्योगिक श्रमिक
शहरी कर्मचारी

Banking.

बैंक:-

⇒ ऐसी संस्था जो लोगों से -

① जमाऐं स्वीकार करती है।
② एवं उन पर ब्याज देती हैं।
③ वह लोगों को ऋण उपलब्ध कराती है।
④ एवं उस पर ब्याज लेने का कार्य करती है।

भारत में बैंकिंग का इतिहास:-

① 1770 में मैसर्स एलेक्जेण्डर एण्ड कम्पनी ने "बैंक ऑफ हिन्दुस्तान" की स्थापना की। (1st phase)

② तीन प्रेसीडेन्सी बैंकों की स्थापना हुई। (2nd phase)

गवर्नर का शासन

- 1806 – बैंक ऑफ बंगाल
- 1840 – बैंक ऑफ बॉम्बे
- 1843 – बैंक ऑफ मद्रास

Imperial Bank of India

③ 1921 में इन तीनों बैंकों का विलय करके इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया नाम दिया गया।

④ 1 जुलाई 1955 को इसका राष्ट्रीकरण किया गया. और नाम (SBI) रखा गया।

State Bank of India

⑤ इलाहाबाद बैंक = 1865 (3rd phase)
⑥ एलाइस बैंक ऑफ इंडिया = 1881
⑦ अवध कॉमर्शियल बैंक = 1881
⑧ पंजाब नेशनल बैंक = 1894 (पूर्ण रूप से भारतीयों के द्वारा संचालित)
⑨ बैंक ऑफ इंडिया = 1906 (4th phase)
⑩ पंजाब एण्ड सिंध बैंक = 1908
⑪ बैंक ऑफ बड़ौदा = 1909
⑫ सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया = 1911
⑬ बैंक ऑफ मैसूर = 1913
⑭ भारतीय रिजर्व बैंक = 1935
↳ केन्द्रीय बैंक

चेम्बर लिन = 1914 (सर्वप्रथम भारत में केन्द्रीय बैंकिंग संस्था की स्थापना की बात कही)

Divijay Sir GS

⇒ यंगहिल्टन = 1934 (केन्द्रीय बैंकिंग जांच समिति) - रिजर्व बैंक समिति।

1 अप्रैल 1935 – "RBI" की स्थापना।

प्रथम गवर्नर – ओसवर्न स्मिथ

वर्तमान गवर्नर – शक्तिकांत दास। ✓

RBI

मौद्रिक नीति

मुद्रा के प्रवाह को संतुलित बनाये रखना।

Operations –

1) CRR (नकद आरक्षित अनुपात)

2) SLR (वैधानिक तरलता का अनुपात)

3) Repo rate – जिस rate पर RBI बैंक को ऋण उपलब्ध कराती है। ✓

4) Reverse Repo rate – बैंक RBI को जिस दर पर अल्पकालीन ऋण प्रदान करते हैं, उसे Reverse Repo rate कहते हैं। ✓

RBI ⟶ बैंक (security paper)

ऋण (अल्पकालीन ऋण) ✓

① मुद्रा का प्रवाह

② बहुत अधिक ऋण

③ सरकार को वित्त की आवश्यकता।

R.Reporate < Reporate

RBI सिक्योरिटी पेपर जारी करता है।

सरकार के Behalf पर

- 1000 करोड़ ₹
- 500 करोड़ ₹
- 200 करोड़ ₹
- 100 करोड़ ₹

① सरकार को ₹ की आवश्यकता हो।

② घरेलू क्षेत्र से ले।

③ Market में मुद्रा का प्रवाह बहुत अधिक है।

④ मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न न हो।

Repo Rate – बैंक ⟶ RBI

अल्पकालीन ऋण (Maximum 7 days)

RBI ⟶ Bank ⟶ ऋण

security paper ⟶ क्रय करने का वादा।

Deposit

(उतने ही मूल्य के जितना उन्हें ऋण चाहिये)

Digvijay Sir GS

CRR (Cash Reserve Ratio):-

RBI – बैंकों

आप अपने नकद का एक हिस्सा हमारे पास रखिए।

क्यों - ① दिवालिया ✓
② fraud नहीं ✓
③ देयता में कमी ✓

SLR (वैधानिक तरलता अनुपात):-

RBI → अपने पास → बैंकों

Cash + gold edged + security paper.

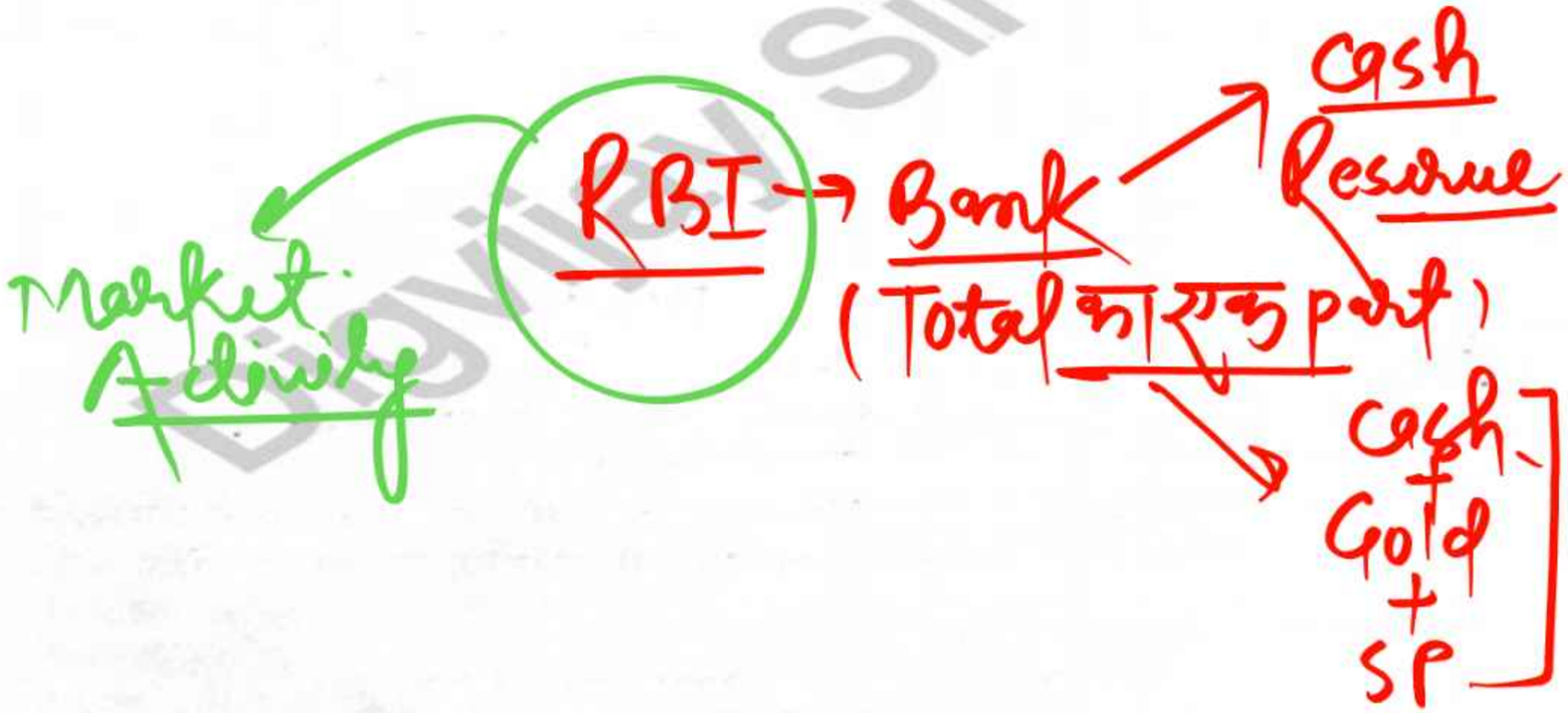

Divine Sir GS